देवी-देवताओंकी उपासना : स्तोत्र - खण्ड १

श्रीरामरक्षास्तोत्र एवं हनुमानचालीसा (अर्थसहित)

(Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्‌घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सनातन संस्था

प्रस्तुत पुनर्मुद्रणकी ४,००० प्रतियां तथा इस
लघुग्रन्थकी अबतक ३३,६०० प्रतियां प्रकाशित !

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मके प्रसार हेतु ‘सनातन संस्था’ की स्थापना !

२. ‘गुरुकृपायोग’ नामक साधनामार्गके जनक !

३. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

४. गुरुकुलसमान ‘सनातन आश्रमों’की निर्मिति !

५. ग्रन्थ-रचना : मार्च २०२४ तक ३६५ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९६ लाख प्रतियां !

६. शारीरिक, मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियोंकी पीडाओंकी उपचार-पद्धतिसम्बन्धी शोध !

७. ‘सनातन प्रभात’ नियतकालिकोंके संस्थापक-सम्पादक !

८. ‘हिन्दू राष्ट्र’की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तरपर दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें - ‘**www.Sanatan.org**’.)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्‍वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥

– जयंत बाळाजी आठवले
१५.५.१९९६

डॉ. जयंत आठवलेजीकी ‘सच्चिदानंद परब्रह्म’ उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

१३.७.२०२२ से ‘सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका’के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको ‘सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले’ सम्बोधित किया जा रहा है । इन उपाधियोंके अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थके मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें आवश्यक स्थानोंपर वैसा उल्लेख किया है। **– (पू.) श्री. संदीप आळशी, सनातनके ग्रन्थोंके संकलनकर्ता** (२४.७.२०२२)

भूमिका

संध्याके समय हमारे घरोंमें भगवानके समक्ष दीया जलानेके उपरान्त 'ॐ जय जगदीश हरे' एवं हनुमानचालीसा परिपाठकी प्रथा है ।

१. स्तोत्रोंके रचनाकार

रामरक्षाकी रचना बुधकौशिक ऋषिने तथा हनुमानचालीसाकी रचना सन्त तुलसीदासने की है । आत्मज्ञान सम्पन्न ऋषि-मुनि एवं साधु-सन्तोंको इन वाङ्मयोंका स्फुरण परावाणीमें होता है । इस अवस्थामें ईश्वरसे उनका पूर्ण अद्वैत होता है एवं ईश्वर ही सम्पूर्ण रचनाके कर्ता हैं, इस अनुभूतिके कारण ही बुधकौशिक ऋषि कहते हैं कि 'भगवान शिवने उन्हें रामरक्षा स्वप्नावस्थामें बताई' ।

२. मन्त्र, कीलक, स्तोत्र एवं कवच

२ अ. मन्त्र : अध्यात्मवाङ्मयमें मन्त्रयोगका अत्यधिक महत्त्व है । श्रीरामरक्षास्तोत्र मन्त्र ही है । रामरक्षाके आरम्भमें 'अस्य

श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य' कहा गया है । मन्त्र शब्दकी कुछ व्याख्याएं आगे दी गई हैं ।

१. 'मननात् त्रायते इति मन्त्रः ।' मननका अर्थ है, मनमें एक ही विचार बारम्बार करना एवं त्रायते का अर्थ है, रक्षा करना; अर्थात जिसके मननसे स्वयंकी रक्षा होती है, उसे मन्त्र कहते हैं । अन्य अर्थ इस प्रकार हैं – जो 'मन'की रक्षा करता है अर्थात जो मनके विलीनीकरणमें सहायता करे, वही मन्त्र है ।

२. 'मन्त्र'का अर्थ है इष्टसाधक एवं अनिष्टनिवारक वर्णसमूह।

३. मन्त्रका अर्थ है, एक नाद / ध्वनि, एक अक्षर, एक शब्द अथवा शब्दोंका समूह । जब निर्धारित लय एवं सुरमें कोई मन्त्र जपा जाता है, उस समय उस जपसे एक विशिष्ट शक्ति निर्माण होती है । इसलिए रामरक्षाका विशिष्ट लयमें उच्चारण करना महत्त्वपूर्ण है ।

यद्यपि रामरक्षाके आरम्भमें 'अनुष्टुप् छंदः' का उच्चारण है, तथापि सर्व श्लोक इस छन्दमें नहीं हैं; अधिकांश श्लोक इस छन्दमें हैं ।

तदर्थभावपूर्वक निष्ठासे (स्तोत्रमें दिए अनुसार) मन्त्रकी पुनः-पुनः आवृत्ति करनेको मन्त्रजप कहते हैं । तदर्थभावपूर्वक = तत् + अर्थ + भावपूर्वक; अर्थात 'उसका (मन्त्रका) अर्थ समझकर भावसहित' । केवल यन्त्रवत मन्त्रका प्राणहीन उच्चारण करनेको जप नहीं कहते । मन्त्रोच्चारण ऐसा होना चाहिए जिससे जपकर्ता भगवद्भावयुक्त एवं भगवच्छक्तियुक्त हो जाए ।

२ आ. कीलक : यदि किसी ऋषिने कोई मन्त्र निर्माण कर यह पूर्वसूचना दी हो कि 'मन्त्रोच्चारणसे पूर्व अमुक शब्दका उच्चारण आवश्यक है, अन्यथा मन्त्रसे फलप्राप्ति नहीं होगी', तब केवल मन्त्रोच्चारणसे लाभ नहीं होता । उस विशिष्ट शब्दको मन्त्रका कीलक, अर्थात पच्चर अथवा मेख कहते हैं । मन्त्रका उच्चारण उस शब्दसहित करनेसे ही मन्त्र फलदायी होता है ।

२ इ. स्तोत्र : इस शब्दकी व्याख्या है - 'स्तूयते अनेन इति' अर्थात जिसके योगसे देवताका स्तवन किया जाए, उसे स्तोत्र कहते हैं । स्तोत्रमें देवताकी स्तुति होती है । इसके साथ ही स्तोत्रपाठ करनेवाले भक्तके सभी ओर सुरक्षा-कवच निर्मित करनेकी शक्ति भी होती है ।

स्तोत्रोंमें फलश्रुति दी जाती है । इसके पीछे रचयिताका संकल्प होता है; इसलिए स्तोत्र पठन करनेवालेको फलश्रुतिके कारण फलप्राप्ति होती है ।

२ ई. कवच : कवच मन्त्रविद्याका एक प्रकार है । इसमें प्रार्थना होती है कि देवता हमारे शरीरकी रक्षा करें । रामरक्षान्तर्गत रामकवचसमान ही शिवकवच, गोपालकवच, हनुमत्कवच, सूर्यकवच आदि कवच प्रसिद्ध हैं । अनेकविध मन्त्रोंकी सहायतासे मानवी देहपर मन्त्रकवच निर्माण किए जा सकते हैं । ये कवच स्थूल कवचसे अधिक शक्तिशाली होते हैं । स्थूल कवच बन्दूक की गोली जैसे स्थूल आयुधोंसे रक्षा करते हैं; जबकि सूक्ष्म कवच स्थूल तथा भूत, जादू-टोना जैसी सूक्ष्म अनिष्ट शक्तियोंसे रक्षा करते हैं ।

इस प्रकार 'जिन शब्दोंके अन्तमें अनुस्वार हों तथा उनके अगले शब्दका प्रथम अक्षर व्यंजन हो, तो अनुस्वारको बिन्दुद्वारा दर्शाया जाए', संस्कृत लेखन की ये पद्धति है; तथापि इस लघुग्रन्थमें रामरक्षाके पाठमें अनुस्वार सम्भवतः ङ्, ञ्, ण्, न्, म् आदि अनुनासिक वर्णोंसे दर्शाए गए हैं । संसार आदि शब्दोंके अन्तर्गत अनुस्वारोंका उच्चारण संस्कृत अनुसार करें । परसवर्णोंद्वारा दर्शाना

सम्भव नहीं, इसलिए वहां अनुस्वार प्रयुक्त किया गया है तथा स्तोत्रपाठ करते समय जहां हम किंचित् रुकते हैं, वहां दो शब्दोंके बीच स्वल्पविराम दिए गए हैं । जहां बडे शब्दोंके उच्चारणके लिए सन्धिविग्रह किया है, वहां स्वल्पविराम दिया गया है; परन्तु शब्दोंमें अन्तर नहीं रखा है । इससे उच्चारण करना सुलभ होगा ।

शब्दोंद्वारा पूर्णरूपसे उच्चारण समझाना असंभव है । साधारण नियम है कि आ, ई, ऊ, के उच्चारणको जानबूझकर कुछ दीर्घ करें । उच्चारण कैसे करना है, यह समझनेके लिए श्रीरामरक्षास्तोत्र सनातन संस्थाके ‘सनातन चैतन्यवाणी’ इस ‘एण्ड्रॉयड एप’, ‘गूगल प्ले स्टोअर’ पर नि:शुल्क उपलब्ध है ।

श्लोकोंका अर्थ अन्तमें दिया है । प्रत्येक शब्द एवं श्लोकका अर्थ ठीकसे समझनेसे उच्चारण अधिक भावपूर्वक होगा । सम्पूर्ण अर्थका स्मरण हो जाए, तो आगे अर्थ पढना आवश्यक नहीं । श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि स्तोत्रपाठ करनेवालोंको अधिकाधिक आध्यात्मिक लाभ हो । – **संकलनकर्ता**

।। श्रीराम जय राम जय जय राम ।।